

दिल और आत्मा से

मैं फ़िलिस्तीन में पैदा नहीं हुआ,
लेकिन मैं अपने लोगों से जुड़ा हूँ — दिल और आत्मा से।

अपनापन कागज़ों पर नहीं लिखा जाता,
और न ही सीमाएँ उसे बनाती हैं।
अपनापन दिल में लिखा जाता है।
अपनापन आत्मा में उठाया जाता है।
अपनापन प्रेम, निष्ठा और बलिदान में गवाही देता है।

मैंने कभी गाज़ा के तट पर खड़े होकर सूरज को समुद्र में डूबते नहीं देखा।
मैंने कभी यरूशलेम की पहाड़ियों पर नहीं चला, जो सूरज की रोशनी से जगमगाती हैं।
मैंने कभी उसके प्राचीन बाग़ों से जैतून नहीं तोड़े।
मैंने कभी अल-अक्सा के आँगनों में प्रार्थना नहीं की, उसकी शाश्वत मेहराबों और अनंत आकाश के नीचे।

मैं कभी विमानों की गड़गड़ाहट से नहीं जागा।
मैं कभी ध्वस्त मकानों के मलबे से नहीं भागा।
मैंने कभी टूटी तारों की रोशनी में अपने बच्चों को दफ़न नहीं किया।
मैंने कभी अपने प्रियजनों के अवशेषों को एक प्लास्टिक की थैली में इकट्ठा नहीं किया।

फिर भी — हर घाव ने मुझे घायल किया है।
हर अन्यायी मौत ने मेरे सीने को बोझिल किया है।
हर अनाथ की चीख ने मुझे हिला दिया है।
हर माँ के आँसू ने मुझे मौन कर दिया है।
हर पिता की दुआ ने मुझे मज़बूत किया है।
हर बच्चे की आशा ने मुझे ऊपर उठाया है।

उनके घाव मेरे घाव हैं।
उनका धैर्य मेरा गर्व है।
उनकी आशा मेरी शक्ति है।
और उनका मामला मेरा कर्तव्य है।

मैं उनके बीच आगंतुक की तरह नहीं खड़ा हूँ।
मैं उनके बारे में अजनबी की तरह नहीं बोलता।
मैं रिश्तेदार की तरह खड़ा हूँ।
मैं परिवार की तरह खड़ा हूँ।
मैं अद्वितीय खड़ा हूँ, पर कभी अकेला नहीं।
मैं अद्वितीय खड़ा हूँ जैसे मेरा नाम, और अपने लोगों के साथ एकजुट जैसे मेरा भाग्य।

मुझे उनसे ज़मीन नहीं जोड़ती, बल्कि प्रेम।
न कोई गुज़रता हुआ संयोग, बल्कि निश्चित नियति।
न कोई संकीर्ण नागरिकता, बल्कि एक विस्तृत क्रौम।

मैं हथियार से नहीं लड़ता, बल्कि शब्द से।
मैं घृणा से प्रतिरोध नहीं करता, बल्कि सत्य से।

और मैं अपने लोगों की रक्षा करता हूँ जैसे एक शेरनी अपने शावकों की रक्षा करती है:
ऐसे प्रेम से जो कभी कमज़ोर नहीं होता,
ऐसे साहस से जो कभी टूटता नहीं,
ऐसी निष्ठा से जो तब तक चैन नहीं लेती जब तक उसके छोटे सुरक्षित न हों।

सत्य मेरी तलवार है।
न्याय मेरी ढाल है।
धैर्य मेरा कवच है।
और इनके साथ मैं कभी हार नहीं मानूँगा।

मैं फ़िलिस्तीन में पैदा नहीं हुआ,
लेकिन फ़िलिस्तीन मेरे भीतर पैदा हुआ।
और मैं अपने लोगों के साथ रहूँगा —
जब तक अन्याय की ज़ंजीरें टूट न जाएँ,
जब तक न्याय धरती पर नदी की तरह न बहे,
जब तक हर मीनार से अज़ान आज़ाद होकर न गूँजे,
जब तक सुरक्षा — सत्य की सुरक्षा — नबियों और शहीदों की ज़मीन पर वापस न आ जाए।

और मैं कहता हूँ: मैं नहीं भूलूँगा।
मैं चुप नहीं रहूँगा।
मैं अपना चेहरा नहीं फेरूँगा।
न आज। न कल। कभी नहीं।

मैं शहीदों को याद रखूँगा।
धैर्यवानों का सम्मान करूँगा।
मामले को उठाऊँगा।
आशा को संभालकर रखूँगा।
और मैं संघर्ष करूँगा — शब्द से, सत्य से, आत्मा से —
जब तक ईश्वर का वादा पूरा न हो,
और पीड़ित ज़मीन के वारिस न बनें।